IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परम्परा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर प्रभाव

[1]नाजिया, *डॉ संजीव कुमार

1. शोधकत्री, चौ.च.सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ, (उ0प्र0) भारत।

*असिस्टेंट प्रोफेसर, कु॰ मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर (उ0प्र0) भारत।

सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा की समग्रता, मूल्य–आधारित दृष्टिकोण एवं बहुविषयक संरचना का विश्लेषण करना है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। भारतीय ज्ञान परम्परा, गुरुकुल परंपरा, नैतिकता, आध्यात्मिक चेतना, जीवनोपयोगी ज्ञान एवं व्यावहारिक कौशल के समन्वय पर आधारित थी, जिसका लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को बहुविषयक, कौशल–आधारित, मूल्यपरक एवं समग्र विकास उन्मुख बनाने पर बल देती है। इस दृष्टि से यह शोध भारतीय ज्ञान परम्परा और एनईपी 2020 के उद्देश्यों के मध्य वैचारिक साम्यता एवं समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय शैक्षिक सिद्धांत आज भी 21वीं सदी की आवश्यकताओं जैसे नैतिक मूल्यों का विकास, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता एवं व्यावसायिक दक्षता की पूर्ति में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

कुंजी शब्दः प्राचीन भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुविषयकता, शैक्षिक सुधार, समावेशी शिक्षा।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। नीति का उद्देश्य भारतीय शिक्षा को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए उसे आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित करना है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली समग्र विकास पर आधारित थी, जिसमें विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और शारीरिक विकास पर समान रूप से बल दिया जाता था। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन जीने की कला, अनुशासन, चरित्र निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी भी इसका हिस्सा थे। इसी प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी समग्र और बहुविषयक शिक्षा पर बल देती है। इसमें कौशल विकास, नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय भाषाओं, योग, आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास भी इसी दिशा में एक कदम है। हालाँकि, यह आवश्यक है कि इन विचारों को केवल परंपरा के रूप में न देखा जाए, बल्कि उन्हें वर्तमान समाज की आवश्यकताओं के अनुसार लागू किया जाए। इसलिए कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर स्पष्ट प्रभाव है, लेकिन इसकी सफलता सही और समावेशी क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी।

भारतीय ज्ञान परम्परा

भारतीय ज्ञान परम्परा वह समृद्ध बौद्धिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विरासत है, जो वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, साहित्य, कला और सामाजिक चिंतन की दीर्घ परंपरा से विकसित हुई है। यह परम्परा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन–मूल्यों, नैतिकता, आध्यात्मिकता और व्यवहारिक बुद्धि के समन्वय पर आधारित रही है। भारतीय दृष्टि में ज्ञान का उद्देश्य मात्र सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मबोध और जीवन के उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति है

वेदों और उपनिषदों में ज्ञान को "विद्या" के रूप में परिभाषित किया गया है, जो अज्ञान से मुक्ति का साधन है। भारतीय दर्शन में ज्ञान को समग्र रूप से देखा गया है, जिसमें तर्क, अनुभव और आत्मानुभूति को समान महत्व दिया गया है। इसी कारण भारतीय ज्ञान परम्परा में गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, व्याकरण, योग और न्याय जैसे विविध विषयों का विकास हुआ।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में यह ज्ञान गुरुकुल परंपरा के माध्यम से संरक्षित और प्रसारित होता था, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास और चरित्र निर्माण था। आज भी भारतीय ज्ञान परम्परा को समग्र शिक्षा, मूल्य–आधारित जीवन और सांस्कृतिक पहचान के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वी शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के शिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें एसडीजी 4 शामिल हैं, के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था, उसके नियमन और गवर्नेंस सहित, सभी पक्षों के सुधार और पुर्नगठन का प्रस्ताव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ–साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या–समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

भारत में कई वर्षो से चली आ रही शिक्षा नीति को हाल ही में सम्पूर्ण रूप से बदल दिया गया। सबसे पहले शिक्षा नीति इंदिरा गाँधी जी ने सन 1968 में शुरू किया था। उसके बाद राजीव गाँधी ने भी इसमें ज़रूरी बदलाव किये थे। 1992 में प्रधानमन्त्री नरसिम्हा राव ने भी इसमें ज़रूरी बदलाव किये थे। जैसे की हम देखते है कि कोई भी चीज़ एक जगह पर बहुत वर्षो से पड़ी है, तब उसमे धुल जम जाया करती है, पहले की शिक्षा नीति का हाल भी ठीक कुछ ऐसा ही था। शिक्षा नीति में भी नया परिवर्तन लाया गया। पुराने शिक्षा नीति से शिक्षा और उन्नति की प्रगति कहीं न कहीं रुक गयी थी। केंद्र की मोदी सरकार ने नयी शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। स्कूल में 10+2 के फॉर्मेट को सम्पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया है उसके जगह पर 5+3+3+4 फॉर्मेट को आरम्भ किया जाएगा। विद्यालय में आर्ट्स, कॉमर्स और विज्ञान विषय को समान रूप से महत्वता दी जायेगी। विद्यार्थी, जो चाहे वह सिलेबस का चुनाव अपने हिसाब कर सकते है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम परिवर्तन करके शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया।

नई शिक्षा नीति की विशेषताएँ

- **मानव संसाधन विकास मंत्रालय अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाएगा**

18 अगस्त 2020 को, भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया। यह नाम परिवर्तन शिक्षा के महत्व पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने और शिक्षा प्रणाली में किए जा रहे परिवर्तनों को दर्शाता है।

- **पांचवी कक्षा तक शिक्षा मातृभाषा या फिर क्षेत्रीय भाषा में प्रदान की जाएगी।**

नई शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) के तहत, पांचवीं कक्षा तक शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में प्रदान किए जाने पर बल दिया गया है।

- **नई शिक्षा नीति स्वतंत्र भारत के तीसरी शिक्षा नीति है जिसमें बुनियादी तौर पर बदलाव किए गए हैं।**

नई शिक्षा नीति 2020 स्वतंत्र भारत में शिक्षा का एक ऐतिहासिक परिवर्तन नई शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) भारत में शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है। यह 1986 में पेश की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.1986) को बदलती है और स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। एन.ई.पी. 2020 में शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने और सभी छात्रों को समान और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है।

- **नई शिक्षा नीति के तहत शैक्षिक क्षेत्र को तकनीकी से भी जोड़ा जाएगा जिसमें सभी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल एक्यूमेंट दिए जाएंगे।**

शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा क्षेत्र को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ने पर बल दिया गया है। यह नीति डिजिटल साक्षरता और 21वीं सदी के कौशल विकसित करने के महत्व को समझती है, जो छात्रों को भविष्य में सफल होने के लिए आवश्यक हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस नीति के निर्माण में भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल भावनाओं और सिद्धांतों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति, जैसे गुरुकुल प्रणाली, वैदिक अध्ययन, संवाद परंपरा और समग्र व्यक्तित्व विकास की अवधारणा, इस नीति के आधारभूत तत्वों में परिलक्षित होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को केवल सूचना या विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि इसे जीवन जीने की कला, नैतिकता, आत्मानुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया है। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को समग्र और बहुआयामी बनाने पर बल देती है। यह नीति विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को समान महत्व देती है, जो भारतीय शिक्षा दर्शन की मूल भावना है।

गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा का एक प्रमुख अंग रही है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच घनिष्ठ संबंध तथा अनुभवात्मक शिक्षण पर बल दिया जाता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पारंपरिक ज्ञान संस्थानों, जैसे वेद विद्यालय, मठ और आश्रम आधारित शिक्षण पद्धतियों को मान्यता देती है तथा भारतीय शास्त्रों, दर्शन, साहित्य और आयुर्वेद जैसे विषयों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है। साथ ही संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में मातृभाषा को शिक्षा का आधार माना गया है। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए छम्ब् 2020 प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में देने की सिफारिश करती है। इससे विद्यार्थियों की समझ, रचनात्मकता और सांस्कृतिक जुड़ाव को मजबूती मिलती है। बहुभाषिकता को प्रोत्साहन देना भी इस नीति का महत्वपूर्ण पहलू है, जो भारत की विविधता और ज्ञान–परंपरा को सशक्त बनाता है।

इसके अतिरिक्त, भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और जीवन मूल्यों का विकास भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य–आधारित शिक्षा, जीवन कौशल, नैतिकता और नागरिक उत्तरदायित्व पर विशेष बल दिया गया है। योग, ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना भारतीय शिक्षा दर्शन की समग्रता को दर्शाता है।

निष्कर्षतः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित होकर शिक्षा को व्यापक, समावेशी और मूल्य–आधारित बनाने का प्रयास करती है। यह नीति आधुनिकता और परंपरा के समन्वय का एक सशक्त उदाहरण है, जो विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ–साथ सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का विकास करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

राणा, पी. और डॉ. जैन, ए. (2025) ने 'ए स्टडी ऑन इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड छम्ब्–2020' पर एक स्टडी की। इस पेपर में उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (प्ज्ै) में कई तरह के पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक परंपराएं और दार्शनिक समझ शामिल हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप में गहराई से जुड़ी हुई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शैक्षिक व्यवस्था में शामिल करना है, जिसका उद्देश्य देश की विरासत का सम्मान करते हुए सभी का विकास करना है। यह पत्र आज की शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की महत्वत्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाई गई एकीकृत रणनीति और इसे लागू करने की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करता है।

डॉ. प्रकाश (2025) ने भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रिय शिक्षा निति 2020: शिक्षा नीति के माध्यम से विरासत को पुनर्जीवित करना पर एक पत्र प्रस्तुत किया। अपने पत्र में उन्होंने कहा कि राष्ट्रिय शिक्षा निति 2020 इस बात में एक बड़ा बदलाव लाती है कि भारत अपनी विरासत को कैसे देखता है और उसकी महत्वत्ता को कितना समझता है। यह पत्र बताता है कि राष्ट्रिय शिक्षा निति 2020 भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा में कैसे शामिल करना चाहता है। इसमें इस कदम के पीछे के विज़न, इसे लागू करने के लिए उठाए गए कदमों, ज़मीनी स्तर पर आने वाली चुनौतियों और आगे के संभावित तरीकों पर चर्चा की गई है। अध्ययन में बताया गया है कि इस नीति ने भारत की बौद्धिक परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए नए मार्ग खोले हैं, लेकिन इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन विचारों को प्रायोगिक, सबको साथ लेकर चलने वाले और सार्थक तरीके से क्लासरूम में कितने असरदार तरीके से लाया जाता है।

प्रधान, एन., देवी, डी. और हालोई, डी. (2025) ने रिएण्टीग्रटेड इंडियन नॉलेज सिस्टम इन मॉडर्न एजुकेशन : करिकुलर शिफ्ट अंडर छम्च 2020 पर अपना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारत हमेशा से गहरी समझ और समृद्ध परंपराओं का घर रहा है, आर्यभट्ट जैसे पुराने विचारकों से लेकर मेडिसिन, पर्यावरण और दैनिक ज़िंदगी में समग्रअभ्यास तक। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (छम्च) 2020 उस ज्ञान को क्लासरूम में वापस लाने के लिए एक बड़ा कदम उठाती है।

टी. अशोककुमार, टी. रसेल राज, ए. राजदुरई, ए.एच. अबिशिनी, ए.एच. अंचानी (2025) ने इम्पैक्ट एनालिसिस ऑफ़ द न्यू एजुकेशनल पॉलिसी 2020: ए कॉम्प्रिहेंसिव रिव्यू, पर प्रस्तुत किया। इस पत्र में उन्होंने तर्क दिया कि नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 (छम्च 2020) भारत के एजुकेशन सिस्टम में एक अहम पड़ाव है, जिसका मकसद देश के एजुकेशनल माहौल को बदलना है। यह रिव्यू छम्च 2020 का पूरा एनालिसिस देता है, जिसमें ग्लोबल एजुकेशनल ट्रेंड्स के साथ इसके अलाइनमेंट, कॉम्पिटेंसी–बेस्ड प्रोग्रेस पर ज़ोर, और स्टूडेंट लर्निंग आउटकम, टीचर ट्रेनिंग, और एजुकेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पर इसके संभावित असर को देखा गया है।

समस्या की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तीव्र सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी तथा आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित हो रही है। वैश्वीकरण, ज्ञान–अर्थव्यवस्था, डिजिटल तकनीक और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण ने शिक्षा को अधिक कौशल–केंद्रित बना दिया है। इस प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना और समग्र विकास जैसे आयाम अपेक्षाकृत कमज़ोर पड़ते दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान परम्परा, जो शिक्षा को केवल रोज़गार का साधन न मानकर व्यक्तित्व के समग्र विकास का माध्यम समझती है, पुनः प्रासंगिक हो उठती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शैक्षिक पुनर्संरचना के आधार के रूप में प्रस्तुत किया है। परंतु यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में किस प्रकार सार्थक रूप से समाहित किया जा सकता है। यदि इसे केवल सांस्कृतिक पुनरुत्थान के रूप में देखा गया तो इसका व्यावहारिक लाभ सीमित रह सकता है; अतः इसके आलोचनात्मक और संदर्भानुकूल अध्ययन की आवश्यकता है। इस समस्या का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इससे शिक्षा को मूल्यपरक, समावेशी और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में ठोस सुझाव प्राप्त हो सकते हैं। साथ ही, यह शोध नीति–निर्माताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा और एनपीई 2020 पर इसके प्रभाव की जांच करने पर बल दिया गया है। इसलिए इस समस्या का कथन **"भारतीय ज्ञान परम्परा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर प्रभाव"** है।

अध्ययन के उद्देश्य

विषय के कथन के आधार पर, अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

i. भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन करना।
ii. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विस्तार से अध्ययन करना।
iii. भारतीय ज्ञान परम्परा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के वैचारिक पहलुओं तक सीमित है। इसमें प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं, जैसे समग्र विकास, मूल्य–आधारित शिक्षा, बहुविषयक दृष्टिकोण और गुरु–शिष्य परंपरा का अध्ययन किया गया है। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित प्रावधानों का विश्लेषण किया गया है।

यह अध्ययन मुख्यतः पुस्तकों, शोध–पत्रों और नीति दस्तावेजों के आधार पर किया गया है। इसमें किसी विशेष विद्यालय, क्षेत्र या विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष सर्वेक्षण नहीं किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षा और वर्तमान शिक्षा नीति के बीच संबंध को समझना है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) पद्धति का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए केवल एक सांस्कृतिक संदर्भ नहीं, बल्कि एक वैचारिक आधारभूमि के रूप में कार्य करती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली समग्र विकास, नैतिक मूल्यों, अनुशासन, आत्मसंयम तथा बहुविषयक अध्ययन पर आधारित थी। गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन या बौद्धिक दक्षता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित करना था। इस दृष्टि से शिक्षा जीवन–निर्माण की प्रक्रिया मानी जाती थी, न कि केवल रोजगार प्राप्ति का साधन।
वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था तीव्र प्रतिस्पर्धा, कौशल–केन्द्रित प्रशिक्षण और बाज़ारोन्मुखी दृष्टिकोण की ओर उन्मुख होती जा रही है। ऐसे परिवेश में मूल्य–आधारित और व्यक्तित्व–केंद्रित शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन, लचीली पाठ्यचर्या, मातृभाषा में शिक्षण तथा नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों के समावेशन पर बल देती है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सिद्धांतों से साम्य रखता है। यह नीति शिक्षा को केवल सूचना–प्रदाय प्रणाली के रूप में नहीं, बल्कि सृजनात्मक, चिंतनशील और उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण के माध्यम के रूप में देखती है।

हालाँकि, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी नीति की सफलता उसके प्रभावी और समावेशी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। यदि भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों को व्यावहारिक, वैज्ञानिक तथा लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के साथ शिक्षा में समाहित किया जाए, तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को नई दिशा देने के साथ–साथ उसे वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान भी प्रदान कर सकती है।

सुझाव

i. पाठ्यक्रम में व्यावहारिक समावेशन

भारतीय ज्ञान परम्परा को गतिविधि–आधारित, परियोजना–आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। इसे केवल वैचारिक चर्चा तक सीमित न रखकर जीवन–कौशल और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाए।

ii. शिक्षक प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, जिनमें भारतीय ज्ञान प्रणाली की दार्शनिक पृष्ठभूमि, आधुनिक संदर्भों से उसका संबंध तथा नवाचारी शिक्षण विधियों का समावेश हो।

iii. परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

शिक्षा में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, ताकि विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ सांस्कृतिक आत्मबोध भी विकसित कर सकें।

iv. मूल्य शिक्षा का संस्थागत समावेशन

नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को सभी स्तरों पर अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए, जिससे विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व, सहिष्णुता एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हो।

v. भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन

भारतीय भाषाओं में शिक्षण–सामग्री और शोध को बढ़ावा दिया जाए, ताकि ज्ञान का प्रसार व्यापक स्तर पर हो सके।

vi. अनुसंधान को बढ़ावा

भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों पर अंतःविषय शोध को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे इसके समकालीन प्रासंगिक पक्षों को प्रमाणिक रूप से स्थापित किया जा सके।

vii. डिजिटल संसाधनों का विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित ई–कंटेंट, डिजिटल आर्काइव और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज विकसित किए जाएँ, ताकि यह ज्ञान नई पीढ़ी तक तकनीकी माध्यमों से पहुँच सके।

viii. नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की निगरानी

भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन हेतु नियमित मूल्यांकन और मॉनिटरिंग तंत्र विकसित किया जाए, ताकि नीति का क्रियान्वयन केवल दस्तावेज़ी स्तर पर सीमित न रह जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India*. Banaras: Nand Kishore & Bros.

Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education. https://www.education.gov.in

Kumar, K. (2019). *Education and Social Change in India*. New Delhi: Orient Blackswan.

Mukherjee, R. K. (1966). *Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist*. Delhi: Motilal Banarsidass.

Radhakrishnan, S. (1923). *Indian Philosophy* (Vol. 1). London: George Allen & Unwin.

Sharma, C. D. (2000). *A Critical Survey of Indian Philosophy*. Delhi: Motilal Banarsidass.

Singh, Y. (2001). *Indian Sociology: Social Conditioning and Emerging Concerns*. New Delhi: Vistaar Publications.